मीठे रस सूं भर्‌योड़ी राधा रानी लागे .....

मीठे रस सूं भर्‌योड़ी राधा रानी लागे, राधा रानी लागे ।
म्हाने कारो–कारो जमुनाजी को पानी लागे ।। टेर ।।
जमुनाजी तो कारी–कारी, राधा गोरी गोरी ।
वृन्दावन में धूम मचावे, बरसाने की छोरी ।
बृजधाम राधाजू की रजधानी लागे ।।
म्हाने कारो कारो.....

कान्हा नित मुरली में टेरे, सुमिरे बारम्बार ।
कोटिन्ह रूप धरै मनमोहन, कोई न पावे पार ।
रूप–रंग की छबीली, पटरानी लागे ।।
म्हाने कारो कारो.....

ना भावे म्हनै माखन मिसरी, अब ना कोई मिठाई ।
म्हारी जीभडलियाँ ने भावे अबतो, राधा नाम मलाई ।
वृषभानु की लली तो गुड़ धानी लागे ।।
म्हाने कारो कारो.....

राधा–राधा नाम रटत है जो नर आठों याम ।
इनकी बाधा दूर करत है राधा–राधा नाम ।
राधा नाम में सफल ज़िन्दगानी लागे ।।
म्हाने कारो कारो.....

जमुनाजी रे किनारे, मोहन बंसी मधुर बजाई ।
बंसी की धुन सुनकर गोपी दौड़ी आई ।
राधा नाम के आगे जग सारो खारो लागे ।।
म्हाने कारो कारो.....

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।।